अभिनंदन: पवित्र आत्मा द्वारा पवित्र किए गए लोगों के नाम

प्रेरित ने अपनी पत्री का आरंभ औपचारिक रीति से किया। उसने शान्त तथा विनम्र रीति से अपना परिचय दिया। अपना परिचय देना तथा शालीन आरंभिक आयतें संकेत करती हैं कि लेखक की अपेक्षा थी कि उसे सुना जाएगा। उसके शब्द तानाशाह के से नहीं थे; वह न तो अपने व्यक्तिगत अनुयायी बनाने के लिए लिख रहा था और न ही अपने बल द्वारा उन पर दबाव डाल रहा था। उसने कलीसिया को प्रोत्साहित करने के लिए, उन्हें उस समय चल रहे संकट का सामना करने के संसाधन प्रदान करने के लिए, मसीह में विश्वास को दृढ़ करने के लिए, और जीवन में पवित्रता की प्रेरणा देने के लिए उन्हें लिखा।

आरंभिक अभिनंदन (1:1, 2)

[1]पतरस की ओर से जो यीशु मसीह का प्रेरित है, उन परदेशियों के नाम जो पुन्तुस, गलातिया, कप्पदुकिया, आसिया और बिथुनिया में तितर-बितर होकर रहते हैं, [2]और परमेश्वर पिता के भविष्य ज्ञान के अनुसार, आत्मा के पवित्र करने के द्वारा आज्ञा मानने और यीशु मसीह के लहू के छिड़के जाने के लिये चुने गए हैं। तुम्हें अनुग्रह और शान्ति बहुतायत से मिलती रहे।

आयत 1. लेखक ने अपनी पहचान दो प्रकार से की: **पतरस**, और फिर **यीशु मसीह के प्रेरित** के रूप में। उसका जन्म का नाम तो शमौन था, या अधिक उपयुक्त रीति से सिमियोन (जैसा प्रेरितों 15:14; 2 पतरस 1:1 में कुछ प्राचीन यूनानी हस्तलिपियों में आया है)। यह यहूदियों में बहु प्रचलित नाम था। इसी नाम के अन्य लोगों से भिन्नता के लिए उसे शमौन योना का पुत्र (बारयोना; मत्ती 16:17) या वैकल्पिक रूप से यूहन्ना का पुत्र शमौन (यूहन्ना 1:42) भी कहा गया। प्रेरित की वंशावली के बारे में हम इससे अधिक और कुछ नहीं जानते हैं।

मानवीय क्षमताओं के प्रति विशिष्ट अन्तःदृष्टि द्वारा, जब यीशु पहली बार शमौन से मिले, तो उसे एक नया नाम दिया। उन्होंने उसे "कैफा" कहा (यूहन्ना 1:42)। अरामी भाषा का यह नाम "कैफा," यूनानी में अनुवाद हो कर "पतरस" बन गया। यदि वे अँग्रेज़ी बोलते होते तो, यीशु ने उसे "चट्टान" या "पत्थर" कहा होता। व्यवस्था और भजनों में, इस्राएल ने परमेश्वर को चट्टान कहा।[1] परमेश्वर

स्थिर, विश्वासयोग्य, अपरिवर्तनीय है। यीशु ने पहचान लिया कि यह रूखा, भंगुर, अस्थिर गलीली मछुआरा क्या बन सकता है। यीशु की उपस्थिति में रहने से, योना का पुत्र शमौन सामर्थ्य और स्थिरता की चट्टान में परिवर्तित हो जाएगा। यह पुरुष, जिसका जन्म का नाम शिमौन बार योना था, अपने पतरस कहलाए जाने से प्रसन्न था। यही वह नाम था जिससे उसके पाठक उसे जानते थे।

अपनी दूसरी पत्री में, पतरस ने अपनी पहचान "यीशु मसीह का दास और प्रेरित" (2 पतरस 1:1) के रूप में दी। पौलुस भी कभी-कभी अपना वर्णन इन्हीं शब्दों द्वारा करता था (रोमियों 1:1; तीतुस 1:1)। अपनी पहली पत्री के आरंभ में, पतरस के लिए अपने आप को "यीशु मसीह का प्रेरित" कहना पर्याप्त था। यीशु ने अपने साथ के लिए बारह पुरुषों को एकत्रित किया था जिन्हें उन्होंने सिखाना था और अपने प्रतिनिधि तथा गवाह बनाकर संसार में जाने के लिए नियुक्त करना था (लूका 6:13)। मत्ती तथा मरकुस ने केवल एक-एक बार ही उन बारहों को "प्रेरित" की उपाधि दी (मत्ती 10:2; मरकुस 6:30)। इस शब्द का प्रयोग लूका में अधिक हुआ है। बारहों को प्रेरितों में सामान्यतः "प्रेरित" कहा गया है जहाँ वे यीशु के गवाह, विशेष रूप से उसके पुनरुत्थान के गवाह प्रकट होते हैं (प्रेरितों 1:8; 2:32; 3:15)। अपनी पहली पत्री में पतरस यह नहीं भूला कि वह खाली कब्र और पुनरुत्थान हुए प्रभु का गवाह था (5:1)।

पत्री के पहले पाठकों को यह स्मरण दिलाने की कोई विशेष आवश्यकता नहीं थी कि पतरस एक प्रेरित था। मसीही मण्डलियों में केवल एक ही चट्टान थी। वे जानते थे कि वह कौन था। जब उसने अपने आप को प्रेरित कहा, तो उसने उन बीते वर्षों का हवाला दिया जब वह और उसके साथ के अन्य जन गलील और यहूदिया में यीशु के साथ घूमा करते थे। यीशु कोई कल्पना, कोई प्रेत, कोई देह रहित आदर्श नहीं था। वह माँस और लहू का था। प्रेरित के रूप में वह यीशु के साथ रहा था। पतरस ने उनके शब्द सुने थे, उन्हें कोढ़ी को छू कर चंगा करते देखा था, और उनके क्रूस पर चढ़ाए जाने तथा पुनरुत्थान का गवाह था। क्योंकि यह सत्य था, और क्योंकि यीशु ने प्रेरितों को एक विशेष कार्य सौंपा था, पतरस के शब्द अधिकारपूर्ण थे। प्रेरित को आशा थी कि उसका पत्र परमेश्वर के लोगों को सांचे में ढालेगा। शताब्दियों से वह ढालता चला आ रहा है। वास्तविक रीति से पतरस के शब्द, परमेश्वर के शब्द हैं।

पतरस ने अपनी पत्रियाँ उन शिष्यों को संबोधित की जो **पुन्तुस, गलातिया, कप्पदुकिया, आसिया और बिथुनिया** नामक रोमी प्रांतों में रहते थे। यद्यपि पुन्तुस और बिथुनिया दो स्पष्ट भौगोलिक क्षेत्र थे, रोमियों ने उन्हें मिला कर एक प्रांत बना दिया था। ये पाँच नाम चार रोमी प्रशासनिक इलाकों को दर्शाते हैं। ये चारों ही विशाल प्रांत थे। एक साथ मिलाकर वे लगभग सम्पूर्ण एशिया माइनर, या वर्तमान तुर्की देश का अधिकांश भू-भाग बनाते थे। (इस इलाके से संबंधित अधिक जानकारी के लिए, देखिए, *परिचय*, पृष्ठ 9-14.)

यह स्पष्ट नहीं है कि मध्य-60 के दशक में जब पतरस ने यह पत्री लिखी तब कितनी कलीसियाएं और कितने मसीही थे। एशिया प्रांत में संभवतः कई सौ, या

कुछ हज़ार मसीही रहे होंगे। पौलुस के कार्य से हम जानते हैं कि गलातिया में कुछ कलीसियाएं थीं। हम किसी ऐसे कार्य के बारे में नहीं जानते हैं जो उस प्रारंभिक समय में पुन्तुस, बिथुनिया, या कप्पदुकिया में किया गया हो। यह संभव है कि स्वयं पतरस ने ही उन प्रांतों के तितर-बितर क्षेत्रों में कार्य तथा प्रचार किया हो। प्रेरित की आशा थी कि उस सारे इलाके में मसीही होंगे जो उसके शब्दों को सुनेंगे।

शब्द παρεπίδημος *(पारापिडेमोस)* का प्रयोग, जिसका अनुवाद है वे जो परदेशी होकर निवास कर रहे हैं, ऐसी विषय-वस्तु को उठाती है जिसकी जड़ें पुराने नियम में गहराई तक थीं। पतरस ने, 1:17 में, अपने पाठकों के लिए कहा "परदेशी होने का समय" παροικία *(परोइकिया)*। उसने 2:11 में, उन्हें परदेशी और यात्री कहकर संबोधित किया, और दोनों πάροικος *(परोइकोस)* तथा παρεπίδημος *(पारापिडेमोस)* का प्रयोग किया। यह विषय वापस उस समय में जाता है जब अब्राहम कनान में इधर-उधर अस्थायी रूप से रहता था। जब सारा की मृत्यु हुई तो उसे दफनाने के लिए उसके पास कोई स्थान नहीं था। उसने स्थानीय लोगों से कहा, "मैं तुम्हारे बीच अतिथि और परदेशी हूं" (उत्पत्ति 23:4; देखें इब्रानियों 11:13)। यही विषय-वस्तु इस्राएलियों के साथ भी रही जिन्हें परमेश्वर के लिए "परदेशी और बाहरी" होकर रहने के लिए कहा गया (लैव्यव्यवस्था 25:23; देखें भजन 39:12)। पतरस के शब्द यह स्मरण दिलाते हैं कि जो यीशु मसीह के हैं संसार उनका घर नहीं है। वे परदेशी हैं जो यहाँ से हो कर निकल रहे हैं। मसीहियों के लिए चेतावनी है कि उन्हें इस संसार के साथ कोई घनिष्ठ संबंध नहीं जोड़ना है। उनका स्थाई निवास स्थान तब प्रगट होगा जब प्रभु अपनी महिमा में पुनः वापस आएगा।

दोनों ही पत्रियाँ, 1 पतरस और याकूब अपने पाठकों को **तितर-बितर** या बिखरा हुआ (διασπορά, *डायस्पोरा)* संबोधित करती हैं। नए नियम में एकमात्र अन्य स्थान जहाँ यह शब्द आया है यूहन्ना रचित सुसमाचार है (7:35), जहाँ वह उन यहूदियों के लिए आया है जो पलिस्तीन से अलग रहते थे और यूनानी भाषा बोलते थे। पुराने नियम के यूनानी अनुवाद सप्तति (LXX) में, जो यूनानी बोलने वाले यहूदियों में बहुत प्रचलित थी, शब्द "तितर-बितर" उन इस्राएलियों के लिए प्रयोग किया गया जो अन्य-जातियों में बिखरे हुए थे (व्यवस्थाविवरण 28:25; यिर्मयाह 41[34]:17)। पतरस और याकूब दोनों ही के लिए, "तितर-बितर" हुए वे मसीही थे जो यूनानी-रोमी संसार में छितरे हुए थे, परन्तु यहाँ कुछ इससे भी अधिक था। पतरस की समझ थी कि उसके पाठक अपने स्वर्गीय विश्राम से पृथक किए गए थे। वे अपने छुटकारे के दिन की प्रतीक्षा कर रहे थे। पौल एस. मीनियर का विचार सही था जब उन्होंने कहा, "जब कलीसिया को उन लोगों के रूप में सम्बोधित किया गया जो 'तितर-बितर होकर रहते हैं' (याकूब 1:1; 1 पतरस 1:1), तो लेखकों के मन में पलिस्तीन में मसीहियों का अनुपस्थित होना नहीं वरन स्वर्गीय नगर में अनुपस्थित होना था।"[2] मसीह को जानना इस बात को जानना है कि प्रभु को क्या भाता है और

वर्तमान युग के लोगों को क्या भाता तथा चलाता है।

पतरस की पत्री याकूब से इस बात में भिन्न है कि पतरस को अपेक्षा थी कि उसके पाठकों में अन्य-जाति भी होंगे (1:14, 18 पर टिप्पणियाँ देखें)। यद्यपि इस विषय पर विचारों में भिन्नता है, परन्तु ऐसा प्रतीत नहीं होता है कि अपने पाठकों में याकूब को अन्य-जातियों के होने की अपेक्षा थी। पतरस याकूब से इस बात में भी भिन्न है कि उसने एक भौगोलिक क्षेत्र में बिखरे हुओं को संबोधित किया। पतरस के लिए "तितर-बितर" यहूदी तथा अन्य-जाति मसीही विश्वासी थे जो उसके द्वारा नाम लिए गए रोमी प्रांतों में विद्यमान थे। यह शब्द मसीहियों के लिए रूपक अलंकार है। याकूब के लिए "तितर-बितर" (या "बिखरे हुए") विशेषतः यहूदी मसीही विश्वासी थे। याकूब ने इस शब्द को उस विशिष्ट प्रकार से प्रयोग किया जैसा यहूदी करते थे। उसने उन यहूदियों को संबोधित किया जो कनान में नहीं रहते थे।

पतरस ने अपने पाठकों का वर्णन ऐसे दो शब्दों से किया जो आत्मिक अर्थ से उमड़ते हैं। उसने उन्हें "परदेशी," कहा तथा उसने उन्हें "चुने हुए" कहा। इन दोनों शब्दों में पाए जानेवाले प्रचुर अर्थ उनके पुराने नियम में प्रयोग से आते है। यह केवल उसके द्वारा पुराने नियम का उद्धरण ही नहीं है जो मसीहियत को इस्राएल में उसकी जड़ों के साथ बांधता है। पतरस के विचारों का संसार पुराने नियम में स्थापित था। प्रेरित ने महत्वपूर्ण शब्द, धारणाएं, और चेतावनियाँ बीते समयों के भविष्यद्वक्ताओं, व्यवस्थापकों, और विद्वानों के प्रकाशनों से लीं। इस प्रक्रिया में उसने पुराने नियम के शब्दों और विषय-वस्तुओं का भी विस्तार किया और उन्हें स्पष्टतः मसीही रंग प्रदान किए।

हम "परदेशी" और उनके स्वरूप से निकटता से जुड़े हुए पर्यायवाची की चर्चा 1:17 और 2:11 के साथ करेंगे। अभी के लिए, हम शब्द **चुने हुए** का विश्लेषण करना चाहते हैं। ये वे लोग थे जिन्हें परमेश्वर ने चुना था। जंगल में, मूसा ने इस्राएल से कहा था, "और उसने जो तेरे पितरों से प्रेम रखा, इस कारण उनके पीछे उनके वंश को चुन लिया" (व्यवस्थाविवरण 4:37)। व्यवस्था देने वाले ने आगे कहा "... यहोवा ने तेरे पूर्वजों से स्नेह और प्रेम रखा, और उनके बाद तुम लोगों को जो उनकी सन्तान हो सर्व देशों के लोगों के मध्य में से चुन लिया ..." (व्यवस्थाविवरण 10:15)।

क्योंकि "चुने हुए" विशेषकर यहूदियों के लिए प्रयुक्त हुआ (भजन 105:6), उस राजनैतिक हस्ती के लिए जो दाऊद और उसके वंशजों के शासन में अधीन थे, तथा और भी हाल ही में मैकैबियों और उनके वंशज थे तथा क्योंकि मसीह का सन्देश हर जाति के लोगों के लिए है (मत्ती 28:19), यह आशा की जा सकती है कि मसीहियों ने शब्द "चुने हुए" त्याग दिया होगा। परन्तु स्पष्ट है कि उन्होंने ऐसा नहीं किया। यीशु मसीह की कलीसिया इस्राएल का सीधा आत्मिक विस्तार है। यूनानी शब्द ἐκλεκτός *(ऐकलेक्टोस)* का भिन्न रूप से "निर्वाचित" या "चुने हुए" अनुवाद किया जाता है। न तो पौलुस (रोमियों 8:33; कुलुस्सियों 3:12; तीतुस 1:1) और न ही पतरस ने मसीहियों को यह भूल जाने दिया कि वे

परमेश्वर के "चुने हुए" हैं।

मसीहियों के सामने यह मानने का प्रलोभन रहता है कि चुने जाना एक ऐसा कार्य है जिसमें वे निष्क्रिय रहते हैं। वह व्यक्ति कुछ नहीं करता; वह केवल शान्ति से बैठा रहता है और परमेश्वर को उसका चुनाव कर लेने देता है। कुछ लोग चुने जाने को हृदय में आत्मिक जागृति आने के साथ जोड़ते हैं - एक व्यक्तिपरक अनुभव जिसके द्वारा वह जान जाते हैं कि उनका उद्धार हो गया है और इसलिए अब वे परमेश्वर के जन हैं। इससे जुड़ा हुआ एक सिद्धांत यह मानता है कि परमेश्वर ने अनन्तकाल से उद्धार के लिए निर्धारित लोगों की संख्या तय की है। उनका कहना है कि संसार में जन्म के समय ही व्यक्ति चुना हुआ अथवा न चुना हुआ होकर जन्म लेता है। क्योंकि कोई भी परमेश्वर की सार्वभौमिक, अनन्तकालीन आज्ञा के द्वारा ही चुना अथवा नहीं चुना जाता है, इसलिए वह अपनी स्थिति को बदलने के लिए कुछ नहीं कर सकता है।

ऐसी धारणाएं एक ही व्यक्ति पर अत्यधिक केंद्रित होती हैं और समाज संबंधी धारणा की उपेक्षा करती हैं। आई. हॉवर्ड मार्शल का, इस प्रकरण में, यह कहना सही था कि परमेश्वर का पूर्वज्ञान "यह कहने की एक विधि है कि कलीसिया को अस्तित्व में लाने के लिए उसने पहला कदम उठाया।"[3] चुने हुए जन होने की धारणा पुराने नियम से आई है। इस्राएल एक चुना हुआ राष्ट्र था, परन्तु उनमें कुछ व्यक्तिगत इस्राएली चरम सीमा तक परमेश्वर के विरोधी थे। कुछ व्यक्तियों के परमेश्वर विरोधी होने से उस राष्ट्र का परमेश्वर का चुना हुआ होने की स्थिति पर कोई अन्तर नहीं आया। कुछ व्यक्ति परमेश्वर की उपस्थिति से बाहर किए जा सकते थे, परन्तु इस्राएल चुना हुआ ही रहा।

इसी प्रकार से, कलीसिया, जो इस्राएल के चुने हुए होने की आत्मिक वारिस है, को भी "चुना हुआ" होने के पद का आदर प्राप्त है। व्यक्ति कलीसिया में सहभागी होते हैं और इस प्रकार अपने विश्वास के सक्रिय होने पर चुने हुओं में गिने जाते हैं। परमेश्वर की बुलाहट में "अप्रतिरोध्य अनुग्रह" नहीं है। चुना जाना उद्धार के सार्वजनिक प्रस्ताव के प्रति सकारात्मक प्रतिक्रिया देना है। पौलुस ने लिखा, "... क्योंकि परमेश्वर ने आदि से तुम्हें चुन लिया कि आत्मा के द्वारा पवित्र बनकर, और सत्य की प्रतीति करके उद्धार पाओ, जिस के लिये उसने तुम्हें हमारे सुसमाचार के द्वारा बुलाया ..." (2 थिस्सलुनीकियों. 2:13, 14)। जब कोई सुसमाचार के सन्देश को सुनता है, उस पर विश्वास करता है, और उसका पालन करता है, तब वह "चुने हुओं" के साथ अपना भाग जोड़ लेता है। अपने अनुग्रह में परमेश्वर उन्हें चुन लेता है जिनका विश्वास उन्हें आज्ञाकारी होने के लिए विवश करता है (इफिसियों 2:8)। जो चुने हुए होते हैं उन्हें मसीह की कलीसिया में मिला दिया जाता हैं (प्रेरितों 2:47)।

आयत 2. पतरस ने अपने श्रोताओं को रेखांकित करना जारी रखा। उन्हें, जो वे हैं उसे और मसीह को थामने के तात्पर्य को भली-भांति समझने की आवश्यकता थी। उनका चुने हुए जन होना **परमेश्वर पिता के भविष्य ज्ञान के अनुसार** था। पतरस का मानना था कि मसीहियों को, वे चाहे अन्य-जाति

मूर्तिपूजकों में से हों या यहूदियों में से, अच्छे से समझ लेना चाहिए कि जिस परमेश्वर ने अपने आप को इस्राएल पर प्रकट किया था उसी परमेश्वर ने अपने आप को यीशु नासरी में होकर भी प्रकट किया है। यीशु का प्रचार करना किसी नए ईश्वर का प्रचार करना नहीं था। साथ ही, कलीसिया की स्थापना, संसार के सामने परमेश्वर द्वारा रखी गई कोई नई योजना नहीं थी। परमेश्वर के उद्देश्य, जो बीते युगों से प्रकट हैं, कार्यान्वित हुए जब उसके सभी "चुने हुए" मसीह यीशु में विश्वास द्वारा एक साथ हो गए।

जब नए नियम के परमेश्वर से प्रेरणा-प्राप्त लेखकों ने परमेश्वर के "पूर्वज्ञान" के बारे में लिखा तब विषय सदैव ही उसके पुत्र में होकर प्रकट किए जाने वाले उद्धार का "पूर्वज्ञान" था। यह नए इस्राएल, उसकी कलीसिया, का पूर्वज्ञान है। इसे नकारात्मक रूप में कहें तो नया नियम परमेश्वर द्वारा व्यक्तियों के अनन्त भविष्य की व्यक्तिगत जानकारी रखने के बारे में चिंता नहीं करता है। परमेश्वर ने कुछ का विनाश और कुछ का उद्धार पहले से निर्धारित नहीं किया है। व्यक्ति विशेष नहीं वरन कलीसिया परमेश्वर के "पूर्वज्ञान" का विषय है। पतरस चाहता था कि उसके पाठक समझ सकें कि कलीसिया परमेश्वर द्वारा बाद में विचार नहीं की गई है। वह परमेश्वर के मन में सदा काल से रही है। परमेश्वर ने यह पहले से जाना और निर्धारित किया कि यीशु मसीह की कलीसिया होगी, जो न केवल इस्राएल वरन सारी मानव जाति से चुने हुए लोगों से बनेगी। इसी प्रकार से, जब पौलुस ने लिखा कि परमेश्वर ने "अपनी इच्छा की सुमति के अनुसार हमें अपने लिये पहिले से ठहराया, कि यीशु मसीह के द्वारा हम उसके लेपालक पुत्र हों" (इफिसियों 1:5), तो यह "हम" व्यक्ति विशेष नहीं वरन "हम" व्यक्तियों का समूह था जिन्हें परमेश्वर ने पहले से ठहराया।

वाक्यांश **आत्मा के पवित्र करने के द्वारा** (ἐν ἁγιασμῷ πνεύματος, *एन हगियामोई न्युमाटोस)*, जिसका शब्दार्थ है "आत्मा की पवित्रता में," यह घोषणा करता है कि परमेश्वर के "चुने हुए" पवित्र आत्मा के माध्यम से पवित्र किए गए हैं।[4] यही वाक्यांश 2 थिस्सलुनीकियों 2:13 में भी आया है, जिसके लिए NASB में आया है "पवित्र आत्मा द्वारा पवित्र किए जाने के द्वारा।" पौलुस ने पवित्र आत्मा द्वारा पवित्र किए जाने को सुसमाचार के सत्य में विश्वास के साथ संबंधित किया; पतरस ने उसे यीशु मसीह की आज्ञाकारिता के साथ संबंधित किया। दोनों ही प्रेरितों ने एक ही तथ्य को भिन्न शब्दों में व्यक्त किया। पवित्र आत्मा विश्वासी को सुसमाचार की बुलाहट को सुनने और उसे मानने पर पवित्र करता है। आज्ञाकारी विश्वासी के जीवन में पवित्र आत्मा निवास करता है (प्रेरितों 2:38), और ईश्वरीय जीवन जीने में उसकी सहायता करता है। विश्वासी को "पवित्र" इसलिए कहा जाता है क्योंकि उसका जीवन स्वयं परमेश्वर की पवित्रता को प्रतिबिंबित करता है (1 पतरस 1:15, 16)। वह इसलिए पवित्र है क्योंकि उसे पवित्र आत्मा ने परमेश्वर का एक चुना हुआ होने के लिए पृथक कर दिया है।

पवित्र आत्मा के द्वारा विश्वासी को पवित्र ठहराया जाना इस उद्देश्य से है कि वह **आज्ञा मानने और यीशु मसीह के लहू के छिड़के जाने के लिये चुना** गया

है। NASB के अनुवादकों ने वाक्यांश (Ἰησοῦ Χριστοῦ, *ईसू ख्रिस्तू)* को आज्ञाकारिता और छिड़के जाने दोनों के साथ बनाया है। यूनानी भाषा में "यीशु मसीह के" केवल एक ही बार आया है, "छिड़के जाने" के बाद। आज्ञाकारिता को एक पृथक धारणा लेना अधिक अच्छा होगा। पवित्र आत्मा द्वारा पवित्र किए जाने का कार्य "आज्ञा मानने और यीशु मसीह के लहू के छिड़के जाने के लिये" है। पतरस अपने पाठकों को स्मरण दिला रहा था कि यह पवित्रीकरण मसीही पर कर दिए जाना वाला कोई निष्क्रिय कार्य नहीं है। विश्वासी को स्वयं परमेश्वर की इच्छा को थामना होता है जिससे परमेश्वर की इच्छा स्वयं उसकी इच्छा बन जाए। एक ओर तो, मसीह पवित्र करता है (1 कुरिन्थियों 1:30), जिसकी पुष्टि एक प्राचीन स्तुति-गान के शब्द, "खाली हाथ मैं आता हूँ; केवल तेरे क्रूस से लिपटता हूँ" के शब्द करते हैं।[5] दूसरी ओर, पवित्र होना एक विश्वासी को सौंपा गया नैतिक दायित्व है। यह आज्ञाकारिता है। मसीही होना इन सीमाओं में रहना है: (1) मसीह ही है जो पवित्र करता है। (2) पवित्र होना "मनुष्य द्वारा मसीही सन्देश को स्वीकार करने और उसके अनुसार जीने से आता है।"[6]

"उसके लहू के छिड़के जाने।" उसी पूर्वसर्ग के अनुसार, विश्वासी का पवित्र किया जाना आज्ञाकारिता और यीशु मसीह के लहू के छिड़के जाने के लिए है। पतरस ने विशिष्ट मसीही धारणाओं का इस्राएल के धार्मिक जीवन से जुड़ी हुई धारणाओं के साथ मिश्रित करना जारी रखा। लहू का बहाया जाना इस्राएल के लिए स्मरण दिलाने वाली बात थी कि पवित्रीकरण कोई नगण्य बात नहीं थी। मूसा ने लोगों पर और भेंट चढ़ाने की वेदी पर लहू का छिड़काव किया था (निर्गमन 24:6, 8), और याजकों को भी वेदी पर लहू छिड़कना होता था (लैव्यव्यवस्था 3:2)। इब्रानियों के लेखक ने लिखा, "और व्यवस्था के अनुसार प्रायः सब वस्तुएं लहू के द्वारा शुद्ध की जाती हैं; और बिना लहू बहाए पापों की क्षमा नहीं होती" (इब्रानियों 9:22)।

किसी का लहू के द्वारा शुद्ध किया जाना, एक पूर्णतः आत्मिक धारणा है। यदि शब्दार्थ से देखें तो लहू से दाग़ आते हैं; उससे सफाई नहीं होती। इसके विपरीत, जल सफाई करता है। इसलिए मूसा की व्यवस्था शुद्ध करने के जल को भी बताती है। गिनती 19 में, व्यवस्था में लाल बछड़े की धारणा दी गई है। याजकों को लाल बछड़े की राख को पानी में मिला कर मिश्रण बना कर रखना होता था जिससे फिर पारंपरिक रीति से अशुद्ध लोगों को शुद्ध किया जाए। यह केवल एक रोचक तथ्य भर नहीं है कि इब्रानियों के लेखक ने लहू के छिड़के जाने और जल द्वारा धोए जाने को मिला कर कहा: "... हृदय पर छिड़काव लेकर, और देह को शुद्ध जल से धुलवा कर परमेश्वर के समीप जाएं" (इब्रानियों 10:22)। शीघ्र ही पतरस को भी अपने पाठकों के नए जन्म पर आना था, वह नया जन्म जो उनके मसीह में बपतिस्मा लेने से सार्थक होता है।

इन कुछ शब्दों के साथ प्रेरित ने परमेश्वर पिता, पुत्र यीशु मसीह, और पवित्रीकरण के कर्ता पवित्र आत्मा की आशीषों का आह्वान किया। मसीही इस बात की पुष्टि करते हैं कि परमेश्वर एक है, परन्तु उसकी यह एकता तीन

व्यक्तित्वों में प्रगट होती है: पिता, पुत्र, और पवित्र आत्मा। यहूदियों के लिए परमेश्वर का एक होना विश्वास का सबसे महत्वपूर्ण आधार था। यही अब भी है। नया नियम परमेश्वर के एक होते हुए भी तीन व्यक्तित्वों में होने को समझाने के लिए कोई सैद्धांतिक चर्चा प्रस्तुत नहीं करता है। जैसे अन्य नए नियम के लेखकों के लिए, वैसे ही पतरस के लिए भी त्रिएकता एक विद्यमान तथ्य था। अपने आरंभिक इतिहास से ही चर्च में इस विषय को लेकर असमंजस रहा है। त्रिएकत्व को समझाने के प्रयास संतुष्ट कर पाने में कम परन्तु संख्या में अधिक रहे हैं।

तुलनात्मक रीति से त्रिएकत्व पर कम ध्यान क्यों दिया गया है? एक कारण है कि बाइबल में इस शब्द का प्रयोग नहीं हुआ है। आरंभिक उन्नीसवीं शताब्दी में, बार्टन डब्ल्यू. स्टोन एक प्रभावी सुसमाचार प्रचारक थे। अमेरिका में नए नियम की कलीसिया की पुनःस्थापना की गतिविधियों पर स्टोन का बहुत प्रभाव रहा है। उन्होंने ऐसे बहुतों को प्रभावित किया है, जिन्होंने उनके नाम को कभी सुना भी नहीं है। स्टोन त्रिएकत्व की अवधारणा के साथ कोई संबंध नहीं रखना चाहते थे। उनका दृढ़ मत था कि यह अवधारणा सर्वथा असंगत है। केवल इस बात पर सहमत होने के लिए कि त्रिएकत्व एक आवश्यक मसीही शिक्षा है, कोई भी दो मसीही विचारक उससे संबंधित किसी भी अन्य बात पर सहमत होते नहीं लगते थे। स्टोन का कहना था कि ऐसा मसीही सिद्धांत आवश्यक कैसे हो सकता है जिसकी व्याख्या कोई कर ही नहीं सकता?[7] विश्वासियों में एकता बनाए रखने के लिए स्टोन त्रिएकत्व पर कोई मत रखना ही नहीं चाहते थे। आज भी कलीसिया में अनेक लोग यही राय रखते हैं। परन्तु जैसा पतरस ने स्पष्ट किया, चाहे "त्रिएक" शब्द बाइबल में आया है या नहीं, यह अवधारणा तो ही है। यद्यपि कोई मसीही पूरे निश्चय के साथ यह नहीं कह सकता है कि वह समझता है कि परमेश्वर तीन होते हुए भी एक कैसे हो सकता है, फिर भी हम पतरस के साथ इस बात पर सहमत होने के द्वारा कि परमेश्वर पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा है, भला करते हैं।

अपनी प्रारंभिक बातों को पूरा करने के पश्चात, पतरस ने अपना औपचारिक सलाम दिया: **तुम्हें अनुग्रह और शान्ति बहुतायत से मिलती रहे।** प्रेरित ने इन्हीं यूनानी शब्दों "अनुग्रह और शान्ति" के साथ अपनी दूसरी पत्री का आरंभ भी किया (2 पतरस 1:2)। पौलुस अपनी पत्रियों में सलाम के लिए "अनुग्रह और शान्ति" शब्दों को प्रायः प्रयोग करता था। पतरस ने साथ ही यह भी जोड़ दिया कि उसके पाठकों के लिए ऐसा बहुतायत से होता रहे। एक रीति से ये शब्द औपचारिकता थे। संभवतः पतरस ने अपने पाठकों को संबोधित करते हुए इनके अर्थ पर कुछ अधिक ध्यान नहीं दिया होगा। परन्तु एक अन्य रीति से ये शब्द औपचारिक होने से कहीं अधिक बढ़कर थे। पतरस उन मसीहियों को यह बताना चाहता था कि उसकी हार्दिक इच्छा है कि परमेश्वर की अनुग्रह से भरी और सेंत-मेंत मिलने वाली आशीषें, तथा परमेश्वर की शान्ति उनके जीवनों का विशिष्ट गुण बनें।

अनुप्रयोग

चुने हुए परदेशी (1:1, 2)

जब मूसा इस्राएलियों को व्यवस्था दे रहा था, तो उसने कई बार निषेध बात के लिए कहता, "जो व्यक्ति ऐसा करेगा वह अपने लोगों में से नाश किया जाएगा।" प्राचीन निकट पूर्व के एक साथ घुल-मिलकर रहने वाले कबीलों के निवासियों के लिए अपने लोगों से बहिष्कृत कर दिए जाने से बढ़कर क्रूर और कोई दण्ड नहीं हो सकता था। किसी व्यक्ति को बहिष्कृत कर देना बहुत कठोर दण्ड होता था। जब बाबुल ने यहूदा पर विजय प्राप्त की तो सारा राष्ट्र अपने घर से दूर किए जाने के कारण परदेशी बन गया। बाबुल में उन परदेशियों में से एक ने विलाप किया, "हम यहोवा के गीत को, पराए देश में क्योंकर गाएं?" (भजन 137:4)।

आज हमारे संसार में भी बिना अपने देश के होना, बिना ऐसे स्थान के होना जहाँ के आप हैं, एक भयावह बात है। जो लोग विदेशों की यात्रा करते हैं और जो सेना में विदेशों में सेवा करते हैं वे जानते हैं कि जब वे देश की सीमाओं के बाहर भी होते हैं तब भी उनके साथ उनका राष्ट्र, उनके देश के लोग खड़े हैं। परन्तु बहिष्कृत जन का, एक खानाबदोश का, एक शरणार्थी का जीवन एकाकी होता है; उसका अपरिचितों के हाथों दुर्व्यवहार का पात्र होना सहज होता है।

बाइबल में बहिष्कृत होने का प्रसंग बहुतायत से पाया जाता है। अब्राहम कनान में एक खानाबदोश और यात्री बनकर आया। वह देश के कोई भी निवासियों से संबंधित नहीं था। एक समय आया जब उसकी पत्नी सारा का देहान्त हो गया। जीवित तो इधर-उधर आ-जा सकते हैं, परन्तु मृतक नहीं। इसलिए दफनाने के लिए उसे भूमि के एक भाग की आवश्यकता थी। उसने कनान में बसे हुए लोगों के सामने अपनी स्थिति इस प्रकार व्यक्त की: "मैं तुम्हारे बीच अतिथि और परदेशी हूं: मुझे अपने मध्य में कब्रिस्तान के लिये ऐसी भूमि दो ..." (उत्पत्ति 23:4)।

बाहरी होने की अब्राहम की अनुभूति, उस देश में सदा काल का घर न होने की भावना, कभी इस्राएल से दूर नहीं हुई। सदियों के बाद मूसा अब्राहम के वंशजों को मिस्र से बाहर निकाल कर लाया। जंगल में उसने उन्हें परमेश्वर से व्यवस्था दी। उस व्यवस्था की बातों में से एक बात थी "भूमि सदा के लिये तो बेची न जाए, क्योंकि भूमि मेरी है; और उस में तुम परदेशी और बाहरी होगे" (लैव्यव्यवस्था 25:23)। इस्राएल कनान में बसेगा तो सही, परन्तु कभी वहाँ पूर्णतया बसे हुए घर का नहीं होगा।

अपने जीवन के अन्त के समय में, दाऊद ने यरूशलेम में मन्दिर बनवाने की तैयारियाँ कीं। राजा ने परमेश्वर को धन्य कहा और यह कहते हुए प्रार्थना की: "तेरी दृष्टि में हम तो अपने सब पुरखाओं के समान पराए और परदेशी हैं" (1 इतिहास 29:15)। राजा ने इसी विचार को अपने एक भजन में भी सम्मिलित किया: "हे यहोवा, मेरी प्रार्थना सुन, और मेरी दुहाई पर कान लगा;

मेरा रोना सुनकर शांत न रह! क्योंकि मैं तेरे संग एक परदेशी यात्री के समान रहता हूं, और अपने सब पुरखाओं के समान परदेशी हूं" (भजन 39:12)।

यात्री, परदेशी, अजनबी होने की इस भरपूर पृष्ठभूमि में होकर पतरस ने अपने पाठकों को संबोधित किया। पत्री के प्रथम पाठक अपने विश्वास के कारण सताव से निकल रहे थे। इस कारण प्रेरित चाहता था कि वे तीन सच्चाइयों को समझें।

पहली, परमेश्वर के विश्वासयोग्य जन इस संसार को घर बनाकर न तो कभी रहे हैं और न कभी रहेंगे। यदि उनका यह विचार रहे कि उनका जीवन, उनके आदर्श, परमेश्वर में उनका विश्वास समय के साथ मेल नहीं खाता है, तो वे महान लोगों की संगति में हैं। प्रथम-शताब्दी के ईश्वरीय लोगों में ऐसा ही था; और आज भी ऐसा ही है।

इस पत्री के प्रथम पाठक जिस संसार में रहते थे वह वर्तमान संसार की समानता में अधिक और भिन्नता में कम था। अनैतिकता की भरपूरी थी। जब कोई मनुष्य किसी दासी स्त्री को मोल लेता था तो वह उसकी संपत्ति हो जाती थी। दासों के मध्य विवाह प्रतिबंधित था, और अनेक दास होते थे। तलाक आम था, और गर्भपात भी। अनचाहे बच्चे परिस्थितियों तथा वातावरण पर खुले छोड़ दिए जाते थे। हिंसा की बहुतायत थी। यूनानी भाषा बोलने वाले क्षेत्र में रहने वाले लोगों ने, जहाँ पतरस के पाठक रहते थे, रोमियों के अधिक रोचक मनोरंजनों को अपना लिया था। सार्वजनिक रंगशालाओं में योद्धाओं के बीच स्पर्धाएं होती थीं। खूंखार जानवर प्रदर्शनी के लिए रखे जाते थे। कुछ मानवोचित संस्करणों में जानवर आपस में लड़ाए जाते थे; परन्तु बहुधा उन्हें दण्डित अपराधी का, जिसे अपनी रक्षा करने के लिए एक छुरा या जाल दिया जाता था, सामना करने के लिए छोड़ दिया जाता था। हिंसा, क्रूरता, और अनैतिकता एक ऐसे संसार से जन्म लेती थी जिसमें मसीही अपने आप को बेचैन पाते थे। वे अपने आप को बहिष्कृत अनुभव करते थे।

इसे इक्कीसवीं सदी के अमेरिका पर लागू करना कठिन नहीं है। नगरों की गलियों में मादक-पदार्थों को लेकर लड़ाइयाँ होती हैं। अश्लीलता, वेश्यावृत्ति, और यहाँ तक कि वेश्यावृत्ति करवाने के लिए दासत्व आज के संसार के लिए अनजाना नहीं है। रात्रि के समाचार मसीहियों को विचलित करने वाले होते हैं। जितना लोग मसीह को गंभीरता से लेंगे, जितना लोग नासरत के यीशु का अनुसरण करेंगे, उतना ही वे संसार में परदेशी और यात्री रहेंगे।

दूसरी, पतरस चाहता था कि उसके पाठक अपने सताव के समय में यह जानें कि वे परमेश्वर द्वारा चुने हुए हैं। हम चुने जाने को निष्क्रिय घटना समझते हैं। जब कोई वस्त्रों की दुकान में जाता है तो वह दर्जनों वस्त्रों को देखता है। अन्त में उनमें से कुछ ही चुने जाते हैं। वस्त्रों ने कुछ नहीं किया। कोई यह विचार रख सकता है कि परमेश्वर द्वारा चुना जाना भी ग्राहक द्वारा वस्त्र चुनने के समान है। व्यक्ति चुने जाने के लिए निष्क्रिय होकर प्रतीक्षा करता है। धार्मिक संसार में एक बहु प्रचलित सिद्धांत है कि एक पापी के मृत्यु से मसीह में जीवित हो जाने के

लिए परमेश्वर ने संपूर्ण पहल की है। परमेश्वर चुनता है। परमेश्वर विश्वास देता है। परमेश्वर उद्धार निश्चित करता है। स्वयं पापी के किए जाने के लिए कुछ भी नहीं है।

क्या पाप में मृत्यु से मसीह में जीवन तक जाना पूर्णतः निष्क्रिय धारणा है? पतरस का ऐसा विचार नहीं था। पिन्तेकुस्त के दिन, उसी प्रेरित ने जिसने 1 पतरस लिखा सुसमाचार का पहली बार प्रचार भी किया। जब वह अन्त पर आया तो भीड़ ने पूछा कि अब उन्हें क्या करना है। पतरस ने उन से कहा कि वे पश्चाताप करें और पापों की क्षमा के लिए बपतिस्मा लें (प्रेरितों 2:38)। उन्हें कुछ करने को कहा गया था। लूका ने यह महत्वपूर्ण वाक्य भी जोड़ा: "उसने बहुत और बातों में भी गवाही दे देकर समझाया कि अपने आप को इस टेढ़ी जाति से बचाओ" (प्रेरितों 2:40)। इसे KJV ने इस प्रकार कहा है, "अपने आप को इस टेढ़ी पीढ़ी से बचाओ।" ये दोनों ही दिखाते हैं कि पतरस ने अपने श्रोताओं से कहा था कि उन्हें भी कुछ करना है।

यह सत्य है कि मानव परिवार को बचाने के लिए परमेश्वर ने पहल की है। जब मनुष्य पाप में खोया था और बिना किसी आशा के था, तब परमेश्वर ने कार्य किया। परमेश्वर ने विश्वासयोग्य अब्राहम को बुलाया। वह दासत्व में पड़े लोगों को मिस्र से निकाल कर लाया। उसने संसार को तैयार किया जिससे मनुष्य आने वाले मुक्तिदाता के आगमन के लिए तैयार हों। उसने अपने एकलौते पुत्र को भेजा। यह सब बिलकुल सत्य है, परन्तु अन्ततः परमेश्वर की बुलाहट का मानवीय प्रत्युत्तर भी होना है। जो मसीह के पास आता है वह सर्वथा निष्क्रिय नहीं है। मसीही लोग परमेश्वर द्वारा चुने जाते हैं जब वे छुटकारे के सन्देश को सुनते हैं, जब वे विश्वास करते हैं कि यीशु ही मसीह है और अपने विश्वास पर कार्य करते हैं।

तीसरी, पतरस चाहता था कि जिन सताए जा रहे मसीहियों को वह संबोधित कर रहा है वे जानें कि वे पवित्र किए गए हैं। उनका परमेश्वर के साथ संबंध, यीशु मसीह में वे जो आशा साझा करते थे, वे "पवित्र आत्मा के पवित्र करने के कार्य" के द्वारा आए थे। अंग्रेज़ी में क्रिया "पवित्र करना," संज्ञा "सन्त," और विशेषण "पवित्र" में कुछ सामान्य होना प्रतीत नहीं होता है। परन्तु यूनानी भाषा में, क्रिया, संज्ञा, और विशेषण की वर्तनी लगभग समान है। वे एक ही बात को कहते हैं। पवित्र किए जाने से तात्पर्य है पवित्र होना; पवित्र होने का तात्पर्य है सन्त होना। इसे परमेश्वर के लिए रखना है। परमेश्वर ने न केवल उन मसीहियों को चुना जिन्होंने सर्वप्रथम इस पत्री को पढ़ा, उसने उन्हें अपने पवित्र लोग भी बनाया।

जब एक खोया हुआ पापी सुसमाचार को सुनता है, उसके सन्देश पर विश्वास करता है, परमेश्वर की आज्ञा का पालन करता है, परमेश्वर उसे पवित्र करता है। पवित्रिकरण कोई ऐसा कार्य नहीं है जिसे एक व्यक्ति स्वयं कर सकता है। परमेश्वर क्रूस पर यीशु द्वारा बहाए गए लहू के द्वारा पवित्र करता है। परमेश्वर द्वारा पवित्र किए गए लोग सन्त होते हैं। वे परमेश्वर के पवित्र जन हैं।

अधिकांश मसीही यह कहने से संकोच करते हैं कि "मैं पवित्र हूँ।" पतरस को कोई संकोच नहीं था। मसीही होना पवित्र होना है। पतरस का आग्रह, समस्त नए नियम के आग्रह के साथ, यह है: क्योंकि परमेश्वर ने आपको पवित्र किया है, पवित्र लोगों के समान वैसा जीओ जैसा उसने आपको बनाया है। पवित्रता मानवीय गुणों पर निर्भर नहीं है। फिर भी, विश्वासी जीवन के लिए विश्वासयोग्य प्रत्युत्तर की आवश्यकता होती है। पौलुस ने इसे सही कहा: "क्योंकि परमेश्वर के यहां व्यवस्था के सुनने वाले धर्मी नहीं, पर व्यवस्था पर चलने वाले धर्मी ठहराए जाएंगे" (रोमियों 2:13)।

उपसंहार. 1 पतरस में सताव सदा सतह के निकट ही है। दो हज़ार वर्षों से मसीही, अविश्वासी लोगों के प्रतिरोध को झेल रहे हैं। कभी-कभी सताव अन्य की अपेक्षा शारीरिक अधिक होता है; कभी-कभी यह मानसिक अधिक होता है। पतरस ने अपने पाठकों से सताव से बचने के किसी आश्रय स्थल की प्रतिज्ञा नहीं की। उन्हें उसने इस प्रकार समझाया: (1) जब मसीही सताव में पड़ते हैं तो वह परमेश्वर के सन्तों की लंबी कतार में खड़े होते हैं। परमेश्वर के लोगों ने सदा ही यह समझा है कि इस युग में वे घर में नहीं हैं। वे बहिष्कृत, यात्री, और जगत में परदेशी लोग हैं। (2) संसार उनके बारे में चाहे जो भी सोचे, मसीह में होकर वे परमेश्वर के चुने हुए लोग हैं। (3) परमेश्वर ने उन्हें पवित्र किया है। उन्हें पावन किया गया है। पावन होने के कारण, उन्हें पवित्रता का जीवन जीतना हैं।

समाप्ति नोट्स

[1]व्यवस्थाविवरण 32:30, 31; भजन 18:2, 31, 46; 19:14; 28:1; 31:2, 3; 42:9; 62:2, 7; 71:3; 78:35; 89:26; 92:15; 94:22; 95:1; 144:1. [2]पौल एस. मीनियर, "होली पीपुल, होली लैंड, होली सिटी: द जेनिसिस एन्ड जीनियस ऑफ क्रिश्चियन ऐटिट्यूड्स," *इन्टरप्रेटेशन* 37 (जनवरी 1983): 28. [3]आई. हॉवर्ड मार्शल, *न्यू टेस्टामेन्ट थियोलॉजी: मैनी विटनिसेस, वन गॉस्पेल* (डाउनर्स ग्रोव, इलिनोइस: इन्टरवर्स्टी प्रेस, 2004), 644. [4]व्याकरण के अनुसार "पवित्र आत्मा" यूनानी में संबंधकारक रूप में है। यह व्यक्तिपरक संबंधकारक है। [5]ए. एम. टॉपलेडी, "रॉक ऑफ एजेज़," *सौंग्स ऑफ द चर्च,* कौम्प. एण्ड एड. ऐल्टन एच. हॉवर्ड (वेस्ट मोनरो, लॉस एन्जेलेस: हॉवर्ड पबलिशिंग को., 1977). [6]जे. रैम्सी माईकल्स, *1 पीटर,* वर्ड बिबलिकल कॉमेन्ट्री, वोल. 49 (वैको, टेक्सस: वर्ड बुक्स, 1988), 12. [7]बार्टन डब्ल्यू. स्टोन ने अपने पत्र द क्रिश्चियन मैसेंजर में त्रिएक्त्व पर अनेकों बार चर्चा की। जुलाई 1830 के संस्करण (169-73) में की गई चर्चा इस विषय के संबंध में सांकेतिक है। त्रिएकत्व पर स्टोन की राय का संक्षिप्त विवरण देखने के लिए, जेम्स डिफॉरेस्ट मर्च की क्रिश्चियन्स ओन्ली: अ हिस्ट्री ऑफ द रिस्टोरेशन मूवमेन्ट (सिनसिनाटी: स्टैन्डर्ड पबलिशिंग, 1962), 92 देखें।